

राजस्थान जनजातीय आंदोलन

चर्चा में क्यों?

दक्षिणी राजस्थान के जनजाति बहुल क्षेत्रों में एक लोकप्रिय आंदोलन स्वदेशी बीज कसिमाँ को संरक्षित करने के लिये कार्य कर रहा है, जनिमें से अधिकांशतः वलुप्त होने के कगार पर हैं। यह प्रयास फसल वविधिता को बढ़ावा दे रहा है और जलवायु लचीलापन बढ़ा रहा है

मुख्य बडि:

- राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात के ट्राइ-जंक्शन पर स्थति जनजातीय क्षेत्र में लगभग 1,000 गाँवों तथा बस्तियों से हज़ारों जनजातीय लोगों ने बीज महोत्सवों की शृंखला में भाग लिया।
 - बीज महोत्सव में पारंपरिक बीजों का प्रदर्शन किया गया तथा उनके गुणों और महत्त्व पर संवादात्मक सत्र आयोजति किये गए।
 - जनजातियों को कई पीढ़ियों से चली आ रही कृषिप्रथाओं के माध्यम से जैववविधिता की अपनी समृद्ध वरिसत की रक्षा करने के लिये प्रोत्साहति किया गया।
- कृषिक्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते प्रभाव के बीच स्वदेशी बीज जनजातीय समुदायों द्वारा संरक्षति एक महत्त्वपूर्ण वरिसत है।
- बाँसवाड़ा स्थति स्वैच्छिक समूह वाग्धारा बीज उत्सव कार्यक्रमों का मुख्य आयोजक था, जसिसे अन्य जनजाति अधिकार समूहों, जैसे- कृषि एवं आदवासी स्वराज संगठन, ग्राम स्वराज समूह, सकषम समूह और बाल स्वराज द्वारा सुवधि प्रदान की गई थी।